TEACHERS OF BIHAR अंक -1 माह- जनवरी 2026

प्रगाथा

शिक्षा की प्रतिशील गाथाएं

मंजिलें उन्हीं को मिलती है
जिनके ख्वाबों में जान होती है...

ऋषिका कुमारी

हम होंगे कामयाब

कंचन कामिनी

है जुनूं सा जीने में ...

राजकीयकृत मध्य विद्यालय बीहट

www.teachersofbihar.org

प्रगाथा

January, 2026

तरतीब

1 शुभकामना संदेश

प्रो० डॉ० चारु स्मिता मलिक
असिस्टेंट प्रोफेसर
NCSL NIEPA, नई दिल्ली

2 मैं ज़िंदा हूँ

शिव कुमार
संस्थापक
टीचर्स ऑफ बिहार

3 संपादकीय

सीमा संगसार
विशिष्ट शिक्षक (स्नातक ग्रेड)
राजकीयकृत मध्य विद्यालय, बीहट

4 छात्र गाथा

ऋषिका कुमारी
ओ.बी.सी.गर्ल्स
रेसिडेंशियल प्लस टू हाई
स्कूल, बेगूसराय

5 शिक्षक गाथा

कंचन कामिनी
प्रधानाध्यापक
उच्च माध्यमिक विद्यालय पिछला
किशनगंज

6 विद्यालय गाथा

राजकीयकृत मध्य
विद्यालय बीहट, बरौनी
(बेगूसराय)

शुभकामना संदेश

आदरणीय शिक्षक साथियों,
सप्रेम नमस्कार।

टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा प्रकाशित "प्रगाथा" ई-मैगज़ीन के लिए आप एवं आपकी पूरी टीम हार्दिक बधाई की पात्र है। यह ई-मैगज़ीन शिक्षकों के नेतृत्व, उनके सतत प्रयासों तथा विद्यालयों में हो रहे सकारात्मक एवं नवाचारपूर्ण कार्यों को प्रभावी रूप से सामने लाने का एक सराहनीय मंच है।
"प्रगाथा" के माध्यम से शिक्षकों की आवाज़, उनके अनुभव और विद्यालयी स्तर पर किए जा रहे रचनात्मक प्रयास न केवल अन्य शिक्षकों को प्रेरित करेंगे, बल्कि शैक्षणिक नेतृत्व को भी यह सोचने का अवसर देंगे कि जमीनी स्तर पर शिक्षा किस प्रकार परिवर्तन का माध्यम बन रही है।
टीचर्स ऑफ बिहार की यह पहल शिक्षक सशक्तिकरण, सहयोगात्मक नेतृत्व एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह प्रयास आगे भी शिक्षकों और विद्यालयों के विकास में सकारात्मक भूमिका निभाता रहेगा।
आप सभी को इस सार्थक एवं प्रेरणादायी कार्य के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

Charu Smita

सादर,
प्रोफेसर डॉ. चारु स्मिता मलिक
सहायक प्राध्यापक
NCSL, NIEPA, नई दिल्ली

Shiv kumar

मैं ज़िंदा हूँ ...

मैं 20 जनवरी 2019 को
किसी आदेश से पैदा नहीं हुआ।
मेरा जन्म एक एहसास से हुआ।
एक ऐसा एहसास जो
हर उस शिक्षक के सीने में
दबा था ....

जो रोज़ बच्चों को हँसाता था
और खुद चुपचाप रोता हुआ
टूट जाता था...

मैं उस पल जन्मा
जब एक शिक्षक ने
क्लास खत्म होने के बाद
ब्लैकबोर्ड को देर तक देखा
और खुद से पूछा
“क्या मेरी ज़िंदगी बस यहीं तक है?”
हाथ में मोबाइल लेकर देखा तो
बारह बज चुका था,
रात का सन्नाटा था,
घर सो चुका था,
लेकिन शिक्षक जाग रहा था
अपने सवालों के साथ।
किसी ने लिखा
“भाई, अब कब तक ऐसे ही?”

कोई जवाब नहीं आया...
लेकिन खामोशी चिल्ला रही थी
मैंने देखा है एक शिक्षक को
सुबह स्कूल जाते हुए
अपने बच्चे को सिर्फ़ यह कहकर
चुप कराते हुए-
“आज पापा बच्चों के लिए देर से आएँगे।”

मैं ज़िंदा हूँ ...

मैंने देखा है
एक शिक्षिका को
टूटे फर्श पर खड़े होकर
पूरा भविष्य रचते हुए...

मैंने देखा है
कैसे शिक्षक
अपने वेतन से
कक्षा सजाता है
और सम्मान
उधार में भी नहीं मिलता...

मैंने उन आँसुओं को देखा है
जो किसी के सामने नहीं गिरे।
जो बस रात की चादर में
सोख लिए गए...

मैंने उन अपमानों को देखा है
जो लिखे नहीं गए,
क्योंकि शिक्षक
अपमान से नहीं,
अपने कर्तव्य से बँधा होता है...

मैं कोई नारा नहीं हूँ।
मैं किसी मंच की गूँज नहीं हूँ।
मैं सहने की आदत हूँ
जो अब साथ खड़े होने में बदल रही
है...

धीरे-धीरे
मैं बड़ा नहीं हुआ—
मैं गहरा हुआ।
मेरे साथ वे शिक्षक आए
जिनके पास बोलने का साहस नहीं
था
लेकिन सच था...

मैंने किसी से यह नहीं कहा—
“लड़ो।”
मैंने बस कहा—
“ मैं से हम की ओर चलो”
मैंने सरकारी विद्यालय को
उसकी खोई हुई गरिमा लौटाने की
कोशिश की...

मैं ज़िंदा हूँ

मैंने यह याद दिलाया
कि जहाँ संसाधन कम होते हैं,
वहाँ संकल्प बड़ा होता है..

मैंने बताया
कि बिहार का शिक्षक
कमज़ोर नहीं है,वह बस
बहुत ज़्यादा सहनशील है...

आज मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ
तो रास्ता काँटों से भरा दिखता है।
लेकिन अब हर काँटे पर
किसी शिक्षक के कार्यों के फूल भी
लगे है...

आज भी मेरे भीतर
वही पहला शिक्षक है,
जो बच्चों के नाम याद रखता है,
भले ही कोई उसका नाम न जाने...

अगर यह पढ़ते हुए
आपकी आँखें
अपने आप भर आई हैं,
तो समझ लीजिए—
यह मेरी कहानी नहीं है।
यह आपके भीतर
बरसों से चुप बैठी कहानी है
जो आज
शब्द पा गई है...

मैं कोई संस्था नहीं हूँ।
मैं कोई पहचान पत्र नहीं हूँ।
मैं एक शिक्षक का
अधूरा सपना हूँ
जो अब साथ मिलकर
पूरा होना चाहता है...

मैं टीचर्स ऑफ बिहार हूँ।
और जब तक
बिहार का एक भी शिक्षक
बच्चों के भविष्य के आगे
अपनी तकलीफ़ रखकर खड़ा है-
मैं ज़िंदा हूँ...
हाँ मैं ज़िंदा हूँ ....

शिव कुमार
संस्थापक
टीचर्स ऑफ बिहार

प्रगाथा

संपादकीय

टीचर्स ऑफ बिहार का यह छः वर्षों का शानदार सफर आज सातवें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। जब हम किसी बड़े सपने को लेकर आगे बढ़ते हैं तो ज़ाहिर है कि शुरुआत में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।
टीचर्स ऑफ बिहार को भी काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। लेकिन जब हम दृढ़ संकल्पित होकर कोई कार्य करते हैं तो वह कार्य एक न एक दिन सफल जरूर होता है।
शिव कुमार सर ने एक अनोखा सपना देखा और आज उसे हम साकार होते देख रहे हैं।
बिहार के टीचर्स इतने बड़े प्लेटफार्म से जुड़कर अपने विद्यालयों में नित्य नवीन नवाचारों से बच्चों को प्रेरित कर रहे हैं।
जैसा कि विदित है टीचर्स ऑफ बिहार,टीचर्स का, टीचर्स के लिए एवं टीचर्स के द्वारा संचालित एक ऐसा प्लेटफार्म है जिसमें सिर्फ़ और सिर्फ बिहार के टीचर्स अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभाते हैं।
प्रगाथा का प्रकाशन इसी कड़ी में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसके जरिए हम विद्यालय गाथा, शिक्षक गाथा और छात्र गाथा को प्रमुखता से प्रकाशित करेंगे। यह एक मासिक पत्रिका के रुप में होगी। हमारी टीम ने यह निर्णय लिया है कि अगले अंक से सामूदायिक भागीदारी एवं उन अधिकारियों की भी गाथा लिखेंगे जो हमेशा शिक्षकों के साथ खड़े रहे एवं उनका हौसला बढ़ाया।
इस तरह शिक्षा के क्षेत्र में जिनकी भी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। हम उन्हें इंगित करेंगे और उनकी कहानी लिखेंगे।

हमें बहुत खुशी है कि प्रगाथा शिक्षा की प्रगतिशील गाथाएँ के पहले अंक का विमोचन श्रीमति चारू स्मिता मल्लिक के द्वारा किया गया।
प्रगाथा के इस अनोखे सफर में मैम का सहयोग हमें यूं ही मिलता रहे ऐसी शुभेच्छा है।
इस अंक में शिक्षक गाथा कंचन कामिनी मैम किशनगंज, छात्र गाथा ऋषिका कुमारी, बेगूसराय और विद्यालय गाथा में राजकीयकृत मध्य.विद्यालय बीहट, बरौनी की गाथा लिखी गई है। उम्मीद है आपको यह प्रवेशांक जरूर पसंद आएगा।
आप सभी शिक्षक साथियों का तहे दिल से आभार। आप अपना सहयोग निरंतर बनाए रखिएगा।
अगर आप भी ऐसे किसी छात्र, समुदाय, शिक्षक और विद्यालय को जानते हों जिसकी गाथा लिखी जानी चाहिए तो हमें जरूर लिखें।
हमारा ई मेल आईडी है।
sangsar.seema777@gmail.com

संपादक
Seema sangsar

Teachers of bihar

प्रगाथा
TEACHERS OF BIHAR · THE CHANGE MAKERS

छात्र गाथा

ऋषिका कुमारी

ओ.बी.सी.गर्ल्स रेसिडेंशियल प्लस टू हाई स्कूल, बेगूसराय

छात्र गाथा

ऋषिका कुमारी

मंजिलें उन्हीं को मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है,

एक नन्ही बच्ची जो धीमे से मुस्कुराती थी तो गाल के दोनों ओर नन्हे से गड्ढे बन जाया करते थे। कक्षा की सबसे होनहार और चुलबुली लड़की जिसे मैंने पहली बार छठी कक्षा में देखा था। वह कक्षा के मुकाबले कहीं अधिक होशियार और अपने कार्य के प्रति ईमानदार थी। मेहनती तो खैर वह थी ही।

ऋषिका दीक्षांत समारोह में अपने शिक्षकों के साथ

कक्षा का कोई भी गृहकार्य हो या प्रोजेक्ट वह सबसे पहले बना कर देती। मैं जब कलरव पत्रिका का संपादन कर रही थी तो उसमें उसकी भागीदारी हमेशा अव्वल रहती। उसने तब मुझे चौंका दिया था जब उसने पत्रिका के लिए इंग्लिश शार्ट स्टोरी लिख कर दिया था।

ऋषिका सिर्फ लिखने और पढ़ने में ही रुचि नहीं रखती थी बल्कि पेंटिंग भी वह बहुत अच्छा बनाती थी। विद्यालय में एक बार आयुष्मान भारत पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था, जिसमें वह पूरे विद्यालय में प्रथम आई थी। यही नहीं बरौनी प्रखंड स्तरीय स्वच्छता पर पेंटिंग प्रतियोगिता में भी पूरे प्रखंड में प्रथम आई।

ऋषिका ने साइंस प्रोजेक्ट में जिलास्तरीय भागीदारी की। इसके अलावा योग में गहरी अभिरुचि होने के कारण उसने जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

धीरे धीरे उसके पंखों की उड़ान बढ़ती गई और कई सफलताओं का स्वाद चखते हुए वह राजकीयकृत मध्य विद्यालय, बीहट में आठवीं कक्षा अच्छे अंकों से उतीर्ण की।

ऋषिका पेंटिंग प्रतियोगिता में विद्यालय के अन्य प्रतिभागियों के साथ ...

विद्यालय की यह टॉपर छात्रा ऊँची कक्षाओं में प्रवेश के लिए ओ.बी.सी.गर्ल्स रेसिडेंशियल प्लस टू हाई स्कूल में प्रतियोगिता परीक्षा उतीर्ण किया और बेगूसराय के उक्त विद्यालय में दाखिला लिया।

नवीं कक्षा की इस छात्रा ने इतने कम उम्र में वह कर दिखाया जिसकी ख्वाहिश लगभग हर पढ़ने लिखने वाले लोगों के दिल में एक बार तो जरूर उमगती है।

प्रतियोगिता दर्पण जैसे प्रतिष्ठित पत्रिका के निबंध प्रतियोगिता में लिखने की कोशिश करना और सांत्वना पुरस्कार पाना भी बहुत बड़ी बात है।

लेकिन ऋषिका ने इस निबंध प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त कर एक इतिहास रचा है।

बीहट जैसे छोटे शहरों में रहने वाली ऋषिका के सपने बहुत बड़े-बड़े हैं। सिविल सेवा उतीर्ण करने की उसकी यह ख्वाहिश एक न एक दिन जरूर पूरी होगी।

ऋषिका एक मध्यमवर्गीय परिवार से आती है। उसके पिता सुधीर कुमार निजी व्यवसाय करते हैं। उनके आंखों की नमी यह बताती है कि ऋषिका के लिए वह कितने गर्वान्वित हैं।

हर माता-पिता का एक सपना होता है कि उनके बच्चे वह कर जाएं जो वे खुद नहीं कर पाए।

ईश्वर से प्रार्थना है कि यह बच्ची अपने सारे ख्वाब पूरे करें और अपने गाँव, विद्यालय और जिला ही नहीं पूरे राष्ट्र का नाम रौशन करे।

टीचर्स ऑफ बिहार की पूरी टीम इसकी असाधारण प्रतिभा को सलाम करती है एवं उसके उज्जवल भविष्य के लिए ढेरों शुभकामनाएं प्रेषित करती है ...

मंजिलें उन्हीं को मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है,
पंख से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।

ऋषिका कुमारी
बीहट,बरौनी
बेगूसराय

खबरों में ऋषिका कुमारी

छात्रवृत्ति परीक्षा में मध्य विद्यालय की बेटियों का जलवा

प्रतिनिधि, बीहट

राष्ट्रीय आय सह मेधा छात्रवृत्ति परीक्षा 2024-25 के परिणामों में राजकीयकृत मध्य विद्यालय, बीहट की तीन छात्राओं ने सफलता अर्जित कर विद्यालय के साथ अपने माता पिता का ही नहीं, वरन बीहट का गौरव भी बढ़ाया है. ऋषिका कुमारी (129 अंक), वैष्णवी कुमारी (126 अंक) तथा प्रीति कुमारी (116 अंक) ने इस प्रतिष्ठित परीक्षा में सफलता प्राप्त की है. विद्यालय के प्रधानाध्यापक रंजन कुमार ने इस अवसर पर सभी सफल छात्राओं को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हमारे विद्यालय की छात्राओं ने जिस अनुशासन,लगन और मेहनत से यह मुकाम हासिल किया है,वह अत्यंत प्रशंसनीय है. यह सफलता न केवल छात्राओं की है,बल्कि विद्यालय परिवार की साझा उपलब्धि है. हम भविष्य में और अधिक विद्यार्थियों को इस मुकाम तक पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध हैं. उन्होंने ने विशेष रूप से विद्यालय में मेधा छात्रवृत्ति परीक्षा की तैयारी हेतु संचालित विशेष कक्षाओं में सतत योगदान देने वाली वरिष्ठ स्नातक शिक्षक श्रीमती अनुपमा सिंह और स्वयंसेवी शिक्षक राजन कुमार को उनके कठिन परिश्रम,नियमित प्रशिक्षण और सतत अभ्यास सत्र से बच्चों को जोड़े रखने के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी. ग्रीष्मावकाश के बाद उत्तीर्ण छात्राओं एवं उनके शिक्षकों के सम्मान में विशेष समारोह आयोजित किया जायेगा.

ऋषिका

प्रीति

वैष्णवी

Tuesday, June 10, 2025
Begusarai
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/684726d1dc98d88c817e544b

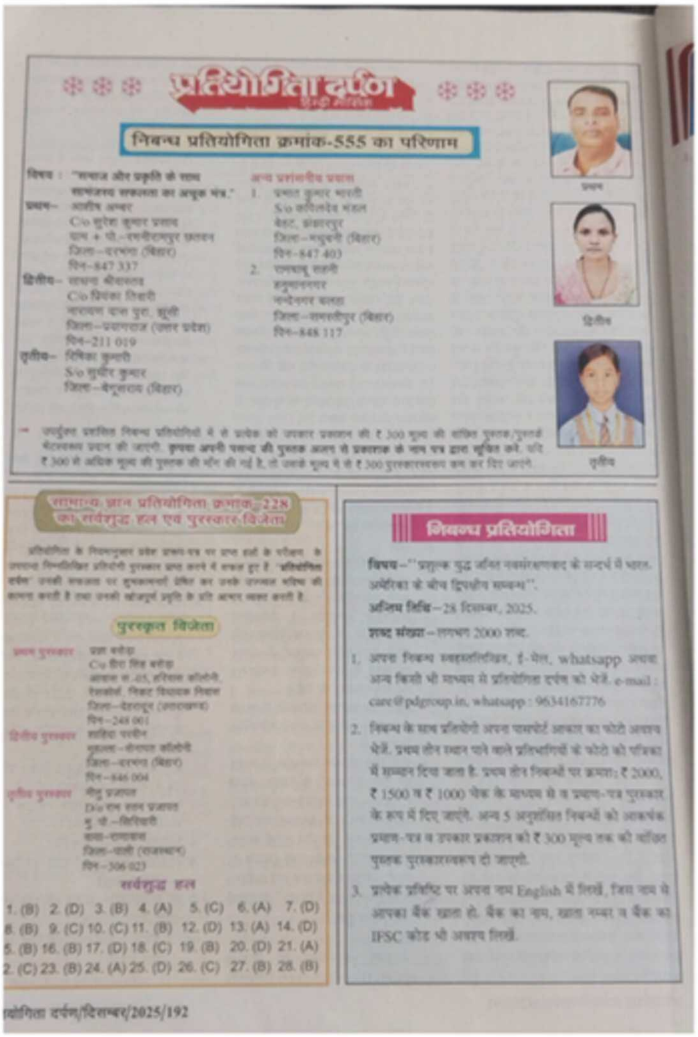

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-555 का परिणाम

विषय : "समाज और प्रकृति के साथ सामंजस्य सफलता का अचूक मंत्र."

प्रथम– आशीष अम्बर
C/o सुरेश कुमार प्रसाद
ग्राम + पो.–[illegible]
जिला–दरभंगा (बिहार)
पिन–847 337

द्वितीय– [illegible]
C/o प्रियंका तिवारी
[illegible], झूंसी
जिला–प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
पिन–211 019

तृतीय– रिषिका कुमारी
S/o सुधीर कुमार
जिला–बेगूसराय (बिहार)

अन्य प्रशंसनीय प्रयास
1. प्रभात कुमार भारती
S/o [illegible] मंडल
[illegible]
जिला–मधुबनी (बिहार)
पिन–847 403
2. [illegible]
[illegible]
[illegible]
जिला–समस्तीपुर (बिहार)
पिन–848 117

प्रथम

द्वितीय

तृतीय

→ उपर्युक्त प्रकाशित निबन्ध प्रतियोगियों में से प्रत्येक को उपकार प्रकाशन की ₹ 300 मूल्य की वांछित पुस्तक/पुस्तकें भेंटस्वरूप प्रदान की जाएंगी. कृपया अपनी पसन्द की पुस्तक अलग से प्रकाशक के नाम पत्र द्वारा सूचित करें. यदि ₹ 300 से अधिक मूल्य की पुस्तक की माँग की गई है, तो उसके मूल्य में से ₹ 300 पुरस्कारस्वरूप कम कर दिए जाएंगे.

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक-228 का सर्वशुद्ध हल एवं पुरस्कार विजेता

[illegible]

पुरस्कृत विजेता

प्रथम पुरस्कार [illegible]
[illegible]
जिला–देहरादून (उत्तराखण्ड)
पिन–248 001

द्वितीय पुरस्कार [illegible]
[illegible]
जिला–दरभंगा (बिहार)
पिन–846 004

तृतीय पुरस्कार [illegible]
[illegible]
जिला–पाली (राजस्थान)
पिन–306 023

सर्वशुद्ध हल

1. (B)	2. (D)	3. (B)	4. (A)	5. (C)	6. (A)	7. (D)
8. (B)	9. (C)	10. (C)	11. (B)	12. (D)	13. (A)	14. (D)
5. (B)	16. (B)	17. (D)	18. (C)	19. (B)	20. (D)	21. (A)
2. (C)	23. (B)	24. (A)	25. (D)	26. (C)	27. (B)	28. (B)

निबन्ध प्रतियोगिता

विषय–"प्रशुल्क युद्ध [illegible] के सन्दर्भ में भारत-अमेरिका के बीच द्विपक्षीय सम्बन्ध".

अंतिम तिथि–28 दिसम्बर, 2025.

शब्द संख्या–लगभग 2000 शब्द.

1. अपना निबन्ध स्वहस्तलिखित, ई-मेल, whatsapp अथवा अन्य किसी भी माध्यम से प्रतियोगिता दर्पण को भेजें. e-mail : care@pdgroup.in, whatsapp : 9634167776
2. निबन्ध के साथ प्रतियोगी अपना पासपोर्ट आकार का फोटो अवश्य भेजें. प्रथम तीन स्थान पाने वाले प्रतिभागियों के फोटो को पत्रिका में सम्मान दिया जाता है. प्रथम तीन निबन्धों पर क्रमशः ₹ 2000, ₹ 1500 व ₹ 1000 चेक के माध्यम से व प्रमाण-पत्र पुरस्कार के रूप में दिए जाएंगे. अन्य 5 अनुशंसित निबन्धों को आकर्षक प्रमाण-पत्र व उपकार प्रकाशन की ₹ 300 मूल्य तक की वांछित पुस्तक पुरस्कारस्वरूप दी जाएगी.
3. प्रत्येक प्रविष्टि पर अपना नाम English में लिखें, जिस नाम से आपका बैंक खाता हो. बैंक का नाम, खाता नम्बर व बैंक का IFSC कोड भी अवश्य लिखें.

योगिता दर्पण/दिसम्बर/2025/192

January,2026

प्रगाथा

शिक्षक गाथा

कंचन कामिनी

उच्च माध्यमिक विद्यालय पिछला किशनगंज

हम होंगे कामयाब एक दिन ...

Kanchan kamini
state Awardee Teacher,
Bihar

आकाश है अपनी अपनी उड़ानों का
ये गुलशन है अपनी अरमानों का ....
कैंपस, कैंपस, कैंपस,

स्मृतियों के गलियारे में जब भी यह गीत गूंजती है तो मैं अपने अतीत में वनस्थली विद्यापीठ पहूंच जाती हूँ। जहाँ रोज सुबह ग्राउंड में बालिका बैंड टीम इस गाने की धुन पर ड्रम और बैंड के साथ अभ्यास कर रही होती थी ...

जी हाँ वही वनस्थली विद्यापीठ जो अब बालिका शिक्षा के लिए पूरे विश्व में तीसरे पायदान पर और एशिया में पहले स्थान पर है। उत्कृष्ट बालिका विद्यालय में जहाँ पढ़ने का गौरव मुझे प्राप्त हुआ वहाँ पढ़ने के लिए आज भी लड़कियों के सपने उमगते हैं...

कठिन प्रतियोगिता परीक्षा और महंगी फीस होने की वजह से बहुत सारी लड़कियां वहां पढ़ने से वंचित रह जाती हैं।

लेकिन अगर मैं कहूँ बिहार जैसे पिछड़े प्रदेश के भोजपुर जिला के एक छोटे से सरकारी स्कूल में भी यह नजारा रोज देखने को मिलता है तो आपको यकीन नही होगा न ...

मुझे भी एकबारगी यकीन नहीं हुआ जब तक कि मैंने कंचन कामिनी मैम से बात नहीं की। कंचन कामिनी मैम ने अपने विद्यालय में न केवल बालिका म्यूजिकल बैंड का गठन किया बल्कि पूरे साजो बाज के साथ पूरे देश में अपनी बैंड टीम के साथ डंका बजा रही हैं ...

आइए आज टीचर्स ऑफ बिहार के शिक्षक गाथा कॉलम में सुनते हैं उनकी कहानी उनकी ही जुबानी ..

मैं कंचन कामिनी प्रभारी प्रधानाध्यापिका दिलीप नारायण प्लस टू उच्च विद्यालय कहथू मसूढी से अपनी यात्रा एक अंग्रेजी शिक्षक के रूप शुरू की। इसके पहले जब वर्ष 2004 में मैं काशी हिंदू विश्वविद्यालय से B.Ed. की डिग्री लेकर आई तो मैंने गांव में रहना स्वीकार नही किया और आरा के ही एक निजी विद्यालय बी डी पब्लिक स्कूल में अपना इंटरव्यू दिया और वही अंग्रेजी शिक्षिका के रूप में पढ़ाना शुरू किया।

2006 में जब मैं सरकारी विद्यालय विद्यालय की शिक्षिका बनी तो विद्यालय में मूलभूत संरचनाओं का अभाव होना शिक्षकों की कमी और नामांकित बच्चों का विद्यालय में न आना एक गंभीर समस्या थी जिसको मैंने एक चैलेंज की तरह लिया और अपने जीवन को इस विद्यालय के बदलाव के लिए समर्पित कर दिया यह यात्रा आसान न था इस यात्रा में अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ा।

संघर्षों से मेरा पुराना नाता रहा है। मेरी ज़िन्दगी शुरू से ही संघर्षों से भरी रही। बचपन में मुझे पोलियो हो गया इससे मेरा बायाँ पैर और दाहिना हाथ प्रभावित हो गया। बाकि बच्चों की तुलना में मैं काफी देर से अपने पैरों पर खड़ी हो पाई। पोलियो के कारण समाज की उपेक्षाएं झेलनी पड़ी।मेरी परिस्थितियों में मुझे हमेशा संघर्ष के लिए तैयार किया। पिता जी ने सरकारी नौकरी छोड़कर गांव लौट आने का निर्णय लिया ताकि वे अपनी बीमार माँ की सेवा कर सकें। मेरी दादी को चिंता थी की लड़की जाति उपर से शारीरिक रूप से अक्षम कैसे इसका जीवन कटेगा। उन्होंने इस बात के लिए दादा जी को मनाया कि आरा शहर में किसी निजी विद्यालय में बेटा बेटी दोनों का नामांकन कराया जाए चूंकि उस दौर में बेटियों को शहर भेजकर पढ़ाना आसान नहीं था। लेकिन मेरे दादा जी स्वयं शिक्षक थे, इसलिए उन्होंने यह ठान लिया कि बेटा-बेटी दोनों को समान अवसर मिलना चाहिए। उस समय आया के कैथोलिक विद्यालय में पठन पाठन की चर्चाएं थी और शिक्षण का खर्च भी ना के बराबर था। कठिन परीक्षा के बाद हमारा नामांकन उस विद्यालय में हुआ।

मैंने स्कूली शिक्षा कैथोलिक हाई स्कूल, आरा से और इंटर की पढ़ाई एच डी जैन कॉलेज, आरा से पूरी की। आर्थिक तंगी के बावजूद मैंने हार नही मानी। माँ ने मुझे पढ़ाने के लिए खुद ट्यूशन पढ़ाया, सिलाई-कढ़ाई करके पैसे कमाए और हमेशा मुझे आगे बढ़ाया। मैं भी अपने से छोटी कक्षा के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर अपनी पढ़ाई का सहारा बनी। मेरे माता-पिता ने कभी इस बात का एहसास नही होने दिया कि मैं शारीरिक रूप कमजोर हूँ।

प्रगाथा

परिस्थितिओं से लडती हुई मैं मानसिक रूप से मजबूत बनी रही । मैं हमेशा आत्मविश्वास से भरी रही। 12वीं के बाद पढ़ाई कहा से किया जाए ये चुनौती थी। मेरी सहेली जो आज एक सरकारी विद्यालय में शिक्षिका है ने आगे बढ़कर मेरी मदद की और परिवार को बिना बताए उसने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में बी ए में नामांकन के लिए मेरा फार्म भरवाया । मेरिट लिस्ट में चयन होने पर घर में खुशी का माहौल था लेकिन समस्या थी कि वहां नामांकन कैसे होगा? कहाँ रहूंगी? पैसा कितना लगेगा? अनेक सवाल चुनौती बनकर सामने खड़े थे । मेरे चाचा जी ने मेरा नामांकन कराया और मुझे हॉस्टल भी मिल गया। जब घर से दूर जाकर रहने की बात आई तो तरह तरह की बातें हुई । जब मैं जाने लगी तो मेरे पास दो जोड़ी कपड़े नहीं थे। मन में हीन भावना आई लेकिन पिता जी ने याद दिलाया कि वस्त्र से तुम्हारी पहचान नहीं। चूंकि नामांकन और रहने का खर्च बहुत कम था लेकिन हर महीने मेस में खाना खाने के पैसे प्रति माह 600 कहा से आएं। मेरे दादा जी ने 10 कट्ठा जमीन बेचा और उसी पैसे से चार वर्ष तक मैं वहां रही।

जब मेरी पढ़ाई बनारस में समाप्त हो गई तो मैं आगे कमीशन की परीक्षाओं की तैयारी करना चाहती थी लेकिन घर की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि मैं शहर में रहकर किसी परीक्षा की तैयारी कर सकूं तो मैं अपने शहर आरा लौट आई । आरा में भी रहने की अनुमति नहीं थी मुझे गांव में रहना था लेकिन मैंने यह निर्णय लिया था कि मैं गांव में न रह के के आरा के किसी नीजी विद्यालय में पढ़ाऊंगी और अपना खर्च खुद वहां करूँगी साथ ही कुछ अपनी तैयारी भी करती रहूंगी । इस तरह से मैं 2004 में आरा के एक निजी विद्यालय बी डी पब्लिक स्कूल में इंटरव्यू दिया और वहां अंग्रेजी शिक्षक के रूप में मेरा सिलेक्शन हुआ इस तरह से मैं शहर में रह पाई और वहां बच्चों को ट्यूशन पढ़ाते हुए विद्यालय में पढ़ाते हुए अपना जीवन शिक्षक के रूप में जीवन शुरू किया।

जब मेरी पढ़ाई बनारस में समाप्त हो गई तो मैं आगे कमीशन की परीक्षाओं की तैयारी करना चाहती थी लेकिन घर की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि मैं शहर में रहकर किसी परीक्षा की तैयारी कर सकूं तो मैं अपने शहर आरा लौट आई ।

प्रगाथा

30 नवंबर 2006 को जब मैं इस विद्यालय में योगदान करने आई तो मेरे मन में ऐसे विद्यालय की छवि नहीं थी। मेरा विषय अंग्रेजी था लेकिन यहां पर किसी भी विषय की कोई शिक्षक नहीं थे। मैं वहां की बेटी थी तो मैं हर घर में गई अभिभावकों को भरोसा दिलाया कि अगर आप अपने बच्चों को भेजेंगे तो हम लोग आपके बच्चों का पठन-पाठन अच्छे ढंग से सुनिश्चित करेंगे। अभिभावकों ने मुझ में विश्वास किया और बच्चे की उपस्थिति दिनों दिन बढ़ने लगी।अब समस्या थी कि वह कहां बैठेंगे कैसे पढ़ेंगे विद्यालय कोष में उपस्थित पैसों से और विधान परिषद सदस्य, श्री संजीव श्याम सिंह की मदद से विद्यालय में 50 बेंच उपलब्ध कराए गए, जिससे बच्चों में एक आशा की किरण आई कि विद्यालय में मूलभूत चीजे धीरे-धीरे उपलब्ध हो रही हैं। यह कारवां बढ़ता गया संस्कृत हिंदी और विज्ञान के शिक्षकों का पदस्थापना बाद के वर्षों में हुई।

गाँव में यह परंपरा थी कि लड़के पढ़ाई करते और लड़कियाँ खेत या घर के कामों में लगी रहतीं। मैंने एक–एक घर जाकर अभिभावकों को समझाया —बेटी पढ़ेगी तो उसका भविष्य बेहतर होगा, परिवार और समाज दोनों को सम्मान मिलेगा। मैंने अपना उदहारण दिया । मैंने बाल विवाह और घरेलू हिंसा जैसी कुरीतियों के खिलाफ़ अभियान चलाया। धीरे–धीरे अभिभावक जागरूक हुए और लड़कियों की संख्या विद्यालय में बढ़ने लगी।

मैंने बच्चों को विद्यालय से जोड़ने का अथक प्रयास किया । मेरे इस प्रयास से बच्चों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई और विद्यालय में हर विषय की पढ़ाई सुनिश्चित करने के लिए हमने पुस्तकालय खेल विज्ञान इत्यादि विषय को भी रुचिकर ढंग से पढ़ने पर जोर दिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि अब हमारा विद्यालय जगदीशपुर ब्लॉक का ऐसा विद्यालय हो गया जहां आस पास की प्रत्येक लड़की नामांकन कराना चाहती थी क्योंकि लोगों में यह विश्वास जगा था कि अब इस विद्यालय में मैडम लड़कियों के लिए सुरक्षा प्रदान करती है और वहां पढ़ाई बहुत अच्छे से होती है।

वर्ष 2018 में प्रधानाध्यापक के रिटायरमेंट के बाद वरीय शिक्षक के रूप में मुझे इस विद्यालय की जिम्मेदारी दी गई प्रभारी प्रधान अध्यापक बनने पर मेरे सामने अनेक चुनौतियां आई सबसे पहली चुनौती था आधारभूत संरचना क्योंकि मैं अब प्रभारी थी तो मैं अब नियम अनुसार विद्यालय में बदलाव कर सकती थी मैंने जनप्रतिनिधि श्री संजीव श्याम सिंह की मदद से विद्यालय के चारदीवारी को ऊपर करवाया विद्यालय में हर मौके पर सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे 15 अगस्त 26 जनवरी इत्यादि पर करवाना शुरू किया। जिसका की शुरू में विरोध हुआ लेकिन जब धीरे-धीरे लड़कियों ने अच्छा किया। लड़के भी अलग अलग गतिविधियों में भागीदारी करने लगे।

ग्रामीण परिवेश में इस तरह की गतिविधियों करना आसान नहीं था लेकिन लड़कियों की प्रतिभा और हुनर को देखते हुए उन्हें जिला स्तर पर जब पुरस्कार प्राप्त होने लगे तो उनके माता-पिता भी आश्वस्त हुए और उनकी भी रुचि हुई और उनकी भी विद्यालय में सहभागिता बढ़ने लगी फिर जब सर्व शिक्षा अभियान से पत्र आया कि विद्यालय में एक म्यूजिकल बैंड का गठन किया जाना है तो मेरे ही विद्यालय को जिला द्वारा चुना गया चुकि कार्यालय कोई आशा थी कि कंचन कामिनी को अगर यह काम दिया जाएगा तो उसको ठीक से करेंगी।

Teachers of bihar

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर कंचन कामिनी सम्मान ग्रहण करते हुए।

मैंने मेहनत करके यूट्यूब और स्थानीय बैंड के लोगों की मदद से बच्चों को स्वयं ही ट्रेनिंग दिया म्यूजिक के शिक्षक थे लेकिन तबला वादक थे तो उनका भी योगदान सराहनीय रहा । उनकी मदद से वाद्य यंत्रों का क्रय करना अलग-अलग प्रकार के वाद्य यंत्रों की जानकारी लेना इत्यादि । यूट्यूब के मदद से वाद्य यंत्रों के बारे में जानकारी प्राप्त की। 15दिन के मेहनत के बाद प्रमंडल स्तरीय प्रतियोगिता में जीतने के बाद हमारा विद्यालय किलकारी भवन पटना में आयोजित 30 नवंबर 2018 इंटर स्कूल म्यूजिकल बैंड प्रतियोगिता में पूरे बिहार के बैंड टीम को पीछे कर प्रथम स्थान प्राप्त किया तो हमारे सपनों को पंख लगे और फिर हमने तब से पीछे मुड़कर नहीं देखा।

इसी कड़ी में जब 2023 में हमने म्यूजिकल बैंड बालिकाओं के लिए बनाया तो चुनौतियां अलग प्रकार की थी क्योंकि यह लड़कियों का बैंड था और यह अपने आप में ही अलग बात थी कि गांव की वैसी लड़कियां जिनके माता-पिता अपने बच्चों को खेतों में काम कराते है उनके हाथ में ट्रंपेट चिम्बल ड्रम टेनर ड्रम बिग ड्रम पकड़ के और उन पर हम होंगे कामयाब का धुन बजाए ।आसान नहीं था लेकिन मैंने ये यात्रा भी पूरी की और उन लड़कियों को जब मोहाली (चंडीगढ़) लेकर जाना हुआ तो मेरे जीवन में एक और कठिनाई मेरे सामने आ खड़ी हुई खड़ी थी मेरा चयन बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित अध्यापक भर्ती परीक्षा में हुआ।

डिजिटल शिक्षा में योगदान और नवाचार के कारण मुझे 5 सितम्बर 2021 को बिहार सरकार का राज्य शिक्षक पुरस्कार मिला। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कार्यक्रम शामिल होने पर मुझे से प्रधानमंत्री प्रशंसा पत्र प्राप्त हुआ। यह मेरे और मेरे विद्यालय के लिए गौरव का क्षण था।

जिससे मुझे अब दूसरे विद्यालय में योगदान करने जाना था बहुत सारी मानसिक परेशानियों को दरकिनार करते हुए मैंने यह निर्णय लिया कि मैं नियोजित शिक्षक ही रहूंगी और ज्वाइन न करके बच्चों को मोहाली ले जाना चुना और 25 लड़कियों को ट्रेन से पंजाब मोहाली लेकर गई । और वहां जब बच्चे गए और राष्ट्रीय स्तर पर जब उनका मुकाबला भारत के बहुत अच्छे-अच्छे विद्यालयों की लड़कियों से हुआ तो उनके लिए एक नया आयाम खुला और लड़कियों ने जाना प्रयास की सार्थकता को समझा । उनमें एक अलग उत्साह जगा और आज वह लड़कियां नेशनल सर्टिफिकेट के साथ अपने भविष्य को संवारने की ओर अग्रसर है।

Teachers of bihar

2012 में विद्यालय में कंप्यूटर शिक्षा शुरू हुई, लेकिन शिक्षक हट जाने के कारण मशीनें बेकार पड़ी रहीं। मैंने 2019 में SCERT से ऑनलाइन प्रशिक्षण लिया था, इसलिए मैंने स्वयं बच्चों को कंप्यूटर सिखाना शुरू किया। खासकर लड़कियाँ 5 किलोमीटर दूर से केवल कंप्यूटर सीखने आती थीं। यह मेरे जीवन के सबसे बड़े संतोषों में से एक है। विद्यालय में खेल, संस्कृत और विज्ञान के शिक्षक नहीं थे। मैंने स्वयं जिम्मेदारी ली और गाँव के रिटायर्ड नेवी पर्सन श्री यशमुद्दीन अंसारी को विद्यांजलि योजना के तहत संस्कृत पढ़ाने का अवसर दिया। मैंने लड़कियों को खो-खो, कबड्डी और बैडमिंटन में जिला स्तर तक पहुँचाया। विज्ञान छात्रा होने के कारण मैंने विद्यालय में साइंस लैब स्थापित की, जो जिले के लिए उदाहरण बनी।

कोरोना महामारी के समय विद्यालय को क्वारंटीन सेंटर बनाया गया। मुझे नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया। मरीजों की तकलीफ़ देखकर मैंने चाय–नाश्ते की व्यवस्था की और उन्हें पौधे लगाने व सफाई करने के लिए प्रेरित किया। मेरे इस योगदान के लिए जगदीशपुर BDO द्वारा ₹10,000 का पुरस्कार मिला।
डिजिटल शिक्षा में योगदान और नवाचार के कारण मुझे 5 सितम्बर 2021 को बिहार सरकार का राज्य शिक्षक पुरस्कार मिला। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कार्यक्रम शामिल होने पर मुझे से प्रधानमंत्री प्रशंसा पत्र प्राप्त हुआ। यह मेरे और मेरे विद्यालय के लिए गौरव का क्षण था।

हर छात्र को घर पर पौधे लगाने और फोटो भेजने की जिम्मेदारी दी।

कला उत्सव, विज्ञान प्रदर्शनियों और खेल प्रतियोगिताओं में बच्चों ने जिला और राज्य स्तर पर पुरस्कार जीते। मैंने हमेशा टीम वर्क पर जोर दिया। शिक्षकों, बच्चों और अभिभावकों को जोड़कर हम सबने मिलकर विद्यालय को आदर्श बनाने का सपना देखा। मेरे विद्यालय में जब से मैंने प्रभारी प्रधान अध्यापिका के रूप में काम करना शुरू किया है अब तक लगभग 50 बच्चों को राष्ट्रीय प्रमाणपत्र मिले और कई को सेना में नौकरी मिली

जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ तो पाती हूँ कि मेरी परिस्थितियों ने मुझे यह अवसर दिया कि मैं केवल एक शिक्षक नहीं, बल्कि समाज में बदलाव की मिसाल बन सकूँ। मैंने आज तक अपनी पढ़ाई जारी रखा है।

और वर्ष 2025 में मैंने यूं जी सी द्वारा आयोजित नेट (अंग्रेजी) की परीक्षा पास किया। मैं अब कालेज में शिक्षक बनने की ओर अग्रसर हूं।
मुझे गर्व है कि मैंने अपने विद्यालय को शिक्षा, खेल, संगीत, पर्यावरण और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में जिले का आदर्श विद्यालय बनाया हैं। सब कहते हैं कि मैंने विद्यालय को नई पहचान दिलाई लेकिन मुझे हमेशा लगता है कि इस विद्यालय ने मुझे कंचन कामिनी बनाया। मैं प्रधान अध्यापिका बनाने के लिए BPSC के द्वारा आयोजित परीक्षा में सफल हो कर प्रधानाध्यापिका बनी हूँ। अब मुझे भोजपुर से स्थान्तरित कर किशनगंज भेज दिया गया है।

दैनिक भास्कर | 7 | 2024-07-31 आरा (2)

सम्मान • स्व-नामांकन आमंत्रित करने के लिए 27 जून से 15 जुलाई तक वेब-पोर्टल खोला गया था

राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए 3 शिक्षकों के नाम प्रस्तावित

मुकेश कुमार | आरा

राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए भोजपुर जिले के तीन शिक्षकों के नाम का प्रस्ताव बिहार सरकार को भेजा गया है। यह नाम उनके मेहनत, लगन और उत्कृष्ट प्रदर्शन को देखते हुए कमेटी ने चयन किया है। इनमें दिलीप नारायण प्लस टू उच्च विद्यालय कहथू मसुढ़ी की प्रधानाध्यापिका कंचन कामिनी, प्रोजेक्ट बालिका प्लस टू विद्यालय जितौरा की प्रधानाध्यापिका श्रीकांति कुमारी और उर्दू मध्य विद्यालय विद्यालय बभनी के प्रधानाध्यापक सुरेश प्रसाद सिंह के नाम की अनुशंसा राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए किया गया है। जिला शिक्षा पदाधिकारी अहसन ने बताया कि शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन स्व-नामांकन आमंत्रित करने के लिए 27 जून से 15 जुलाई तक वेब-पोर्टल खोला गया था। इसके बाद नए पंजीकरण के लिए 16 जुलाई से 18 जुलाई तक तिथि को बढ़ा गया था। शिक्षकों द्वारा स्व-नामांकन के लिए अंतिम तिथि 21 जुलाई तक निर्धारित था।

उत्कृष्ट कार्य के लिए शिक्षा मंत्री से मिल चुका है सम्मान

आरा। दिलीप नारायण प्लस टू उच्च विद्यालय कहथू मसुढ़ी की प्रधानाध्यापिका कंचन कामिनी को सत्र 2020-21 में राजकीय शिक्षक पुरस्कार भी पटना में मिल चुका है। उस समय के शिक्षा मंत्री विजय चौधरी ने उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रधानाध्यापिका को सम्मानित किया था। वर्तमान में पूरे विद्यालय को सीसीटीवी कैमरा से लैस करने को लेकर प्रधानाध्यापिका खूब चर्चा में रही। इन्होंने अपने कार्यकाल में विद्यालय को म्यूजिकल बैंड में पूरे बिहार में प्रथम स्थान दिलाया। राष्ट्रीय स्तर पर भी विद्यालय का गौरव बढ़ाया।

पेंटिंग में विद्यालय को अलग पहचान दिलाने वाली डॉ श्रीकांति का भी चयन

आरा। प्रोजेक्ट बालिका प्लस टू विद्यालय जितौरा की प्रधानाध्यापिका डॉ श्रीकांति कुमारी ने अपने कार्यकाल में 1989 से बिना बाउंड्री के संचालित विद्यालय को सम्पूर्ण निधि फंड से बाउंड्री कराया। [illegible] कार्यकाल में विद्यालय ने बिहार दिवस और भोजपुर के स्थापना दिवस पर पेंटिंग प्रतियोगिता में सफलता हासिल की। साइंस एक्जीबिशन में विद्यालय ने [illegible] एवं स्वच्छता ग्रामीण एवं शहरी प्रवेश में अंतर पर मॉडल प्रस्तुत किया। इसमें विद्यालय को [illegible] मिला।

अपर मुख्य सचिव केके पाठक से भी मिल चुका है सम्मान

आरा। उर्दू मध्य विद्यालय विद्यालय, बभनी के प्रधानाध्यापक सुरेश प्रसाद सिंह को पिछले वर्ष राजकीय [illegible] पुरस्कार शिक्षा मंत्री [illegible] ने दिया था वर्ष-2011 और 2013 [illegible] प्रधानाध्यापक को मिल चुका है। दैनिक भास्कर के साथ बातचीत में उन्होंने बताया कि वर्ष [illegible] का चयन राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए हुआ था लेकिन उम्र की जो पात्र[illegible] और मेरा 12 वर्ष ही अनुभव का हो रहा था।

दैनिक भास्कर आरा 17-07-2024

पौधरोपण • एचएम ने पौधे के साथ एक सेल्फी लेकर विद्यालय प्रबंधन को भेजने की बात कही

स्कूली बच्चों को पौधा देकर लगाने का किया अनुरोध

सिटी रिपोर्टर | जगदीशपुर

प्रखंड के कहथू गांव स्थित दिलीप नारायण प्लस टू विद्यालय में नौवीं वर्ग में नामांकित सभी बच्चों के बीच एक एक पौधा का वितरण हुआ। प्रधानाध्यापक कंचन कामिनी ने बताया कि पौधरोपण कार्यक्रम के तहत बच्चों को एक एक पौधा देकर घर जाकर उसे लगाने और उसे संरक्षित रखने का अनुरोध किया गया। साथ ही लगाए गए पौधे के साथ एक सेल्फी लेकर विद्यालय प्रबंधन को भेजने की बात कही गई। जिससे बच्चों से प्राप्त सेल्फीज का एक कोलाज फोटो फ्रेम बना कर उसे विद्यालय में प्रदर्शित किया जाएगा। जिससे अन्य बच्चे भी उसे देखने के बाद पौधरोपण के प्रति प्रेरित हो सकें। इस दौरान शिक्षक अरुण कुमार पांडेय, प्रभात पांडेय, प्रभात कुमार सिंह, विनीत सौरभ, रंजन कुमार तिवारी, शैलेश कुमार तिवारी, अमर कुमार, सुभम कुमार, जयप्रकाश पासवान, दयानंद कुमार, विनीता कुमारी, अंजली कुमारी शमीम मुर्तजा जाई, चतुर्वेदी गुप्ता, प्रमोद कुमार, कुंदन कुमार सहित अन्य शिक्षक व विद्यालय कर्मी मौजूद थे।

पौधा के साथ स्कूली बच्चे व शिक्षक।

एक हजार बच्चों के बीच पौधा वितरण का संकल्प

कहथू गांव स्थित दिलीप नारायण प्लस टू उच्च विद्यालय प्रबंधन ने धरती को हरा भरा रखने व पर्यावरण संरक्षण को लेकर अनूठी पहल की शुरुआत की है। प्रधानाध्यापक कंचन कामिनी ने बताया कि अंधाधुंध कटाई से हमारी धरती पेड़ पौधों से खाली हो रही है। हम उसकी कमी को पूरा करने के उद्देश्य को लेकर स्कूली बच्चों के माध्यम से वृहद पौधरोपण कार्यक्रम की शुरुआत किये हैं विद्यालय में नामांकित सभी 1000 छात्र छात्राओं के बीच एक एक पौधा वितरण का प्रतिज्ञा व संकल्प ली हूं। कहा कि इस छोटे पहल को पूरा कर इलाके में हरियाली की भरपाई की मेरी कोशिश मात्र है।

आरा जागरण www.j...

कंचन के समर्पण और ड्रम-ब्रास बैंड की धुन पर थिरक रहा बचपन

नमो देव्यै महादेव्यै
नारी सशक्तीकरण

[illegible] सिंह • जागरण

आरा : अपने कर्तव्य बोध के प्रति समर्पण हो तो हालात मायने नहीं रखता है। जगदीशपुर अंचल के सुदूर ग्रामीण क्षेत्र स्थित दिलीप नारायण प्लस टू उच्च विद्यालय, कहथू मसुढ़ी की प्रधान शिक्षिका कंचन कामनी इसकी नजीर हैं। नवाचार से किस तरह नए आयाम गढ़े जा सकते हैं, यह उनसे सीखा जाना चाहिए। छात्रओं के हित के सामने अपने निजी कार्य को तिलांजलि दे दी। जहां स्कूल है, उसके नजदीक के मुसहरी टोला जैसे कई गांवों में सरकार की दो दर्जन योजनाओं के बावजूद शिक्षा की लौ नहीं पहुंची थी। वहां के बच्चे न सिर्फ विद्यालय आ रहे हैं, बल्कि मेधा का भी परचम लहरा रहे हैं।

कहथू मुसहरी टोला में विद्यालय आने के लिए युवाओं से बातचीत करती प्रधान शिक्षिका कंचन कामनी • जागरण

अनुसूचित जाति और अल्पसंख्यक वर्ग से आते हैं। छात्रा विभा, सपना, निभा, रानी, गुड़िया, कृति आदि के ड्रम और ब्रास बैंड की धुन ने बिहार में प्रथम स्थान प्राप्त किया। अखिल भारतीय गर्ल्स बैंड प्रतियोगिता में पूर्वी जोन में चौथा स्थान प्राप्त किया। अब इन छात्राओं को सेना में मैट्रिक परीक्षा के बाद सीधे बहाली मिल सकती है।

विद्यालय में नियमित कक्षा [illegible]

दिवस पर विद्यालय की छात्रा विभा कुमारी क्विज में अव्वल रही। प्रधान शिक्षिका कंचन को विद्यालय के एक-एक बच्चों से गहरा लगाव है। उन्हें मालूम है कि किस बच्चों को क्या जरूरत है। छात्र-छात्राओं की जिद के कारण वह बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा में चयनित होने के बाद दूसरे विद्यालय में योगदान नहीं दिया। उन्होंने कहा कि आत्मसंतुष्टि के लिए करती हूं।

विद्यालय की छात्राओं का ब्रास बैंड दल • जागरण

लिए वर्ष 2022 में शिक्षामंत्री विजय चौधरी ने राजकीय शिक्षा पुरस्कार से सम्मानित किया।

मुसहर और अनुसूचित जाति गांव में जगाई शिक्षा की अलख

स्कूल के आसपास के पहरिया, हिलिया, मसूरी और मुसहरी कहथू टोला में रहने वाले मुसहर और अनुसूचित जाति के बच्चे विद्यालय नहीं आते थे। मुसहर के बच्चे चूहा पकड़ने, लकड़ी तोड़ने आदि काम [illegible] और शिक्षा के महत्व को बताया। इसका परिणाम भी दिखा। कहथू मुसहरी टोला के सभी लड़के-लड़कियां अब विद्यालय में पढ़ते हैं। सुखद यह कि मसुढ़ी की छात्रा सपना परवीन तबला वादन में राज्य में प्रथम आई और अब वह सिद्धार्थ इंटरनेशनल विद्यालय में शिक्षक बन गई है।

स्वरोजगार के लिए मिलता है प्रशिक्षण : सरकारी विद्यालय में [illegible]

- मुसहर, अनुसूचित जाति और अल्पसंख्यक छात्रों को पढ़ाई के साथ स्वरोजगार का मिल रहा प्रशिक्षण
- विद्यालय की महिला ब्रास बैंड ने राज्य में प्रथम और पूर्वी भारत में चौथा स्थान किया प्राप्त

बीच कंचन कामनी के नवाचारों से छात्र-छात्राओं की संख्या तो बढ़ी ही, शिक्षा में गुणात्मक सुधार हुआ। उनकी सेवाभाव को इसी से समझा जा सकता है कि उन्होंने अपने घर पर छह गरीब छात्राओं को रखकर मैट्रिक के क्रैश कोर्स की तैयारी करवायी। इसमें छात्रा संजोनी पांडेय को टाप टेन में स्थान मिला। छात्राओं को स्वरोजगार के लिए भोजपुरी हुनर व जन विकास क्रांति मंच के तहत प्रशिक्षण दिया। विद्यालय की 74 छात्राएं बेकार की प्लास्टिक, कांच आदि से सामग्री बनाती हैं और संस्था को ही बेच देती हैं। इससे उनको तीन से चार हजार रुपये की

खबरों में कंचन कामिनी

कंचन कामिनी ने कराया क्रैश कोर्स छात्राओं को गुरुकुल का अहसास

भीम सिंह भवेश

होटल में छात्राओं संग भोजन करती परिवार फाईल फोटो।

प्रधानाध्यापिका की पहल शिक्षकों के लिए अनुकरणीय : डीईओ

घर का कचरा और प्लास्टिक इधर-उधर नहीं फेंकें : कामिनी

स्वच्छता आधारित कार्यक्रम का आयोजन

गरीब बच्चों के बीच साबुन व वस्त्र वितरित

एसडीआरएफ की टीम ने आपदाओं के बारे में दी विस्तृत जानकारी

जिले के सात टॉपर की सूचना पर डीईओ कार्यालय में रहा उत्सवी माहौल

विद्यार्थी और अभिभावक सहित कर्मियों के बीच बंटा मिठाई

जिला शिक्षा पदाधिकारी कार्यालय।

डीएन प्लस टू विद्यालय में बच्चियों को दक्ष बनाने के लिए वर्कशॉप का आयोजन

महिला दिवस पर जिला प्रशासन ने किया भव्य कार्यक्रम

आईसीडीएस की पर्यवेक्षिकाओं में दिखी मायूसी

कंचन कामिनी प्रभारी प्रधानाध्यापिका से बनेंगी प्रधानाध्यापिका

आरा (एसएनबी)। राजकीय शिक्षक सम्मान से सम्मानित कंचन कामिनी ...

सहारा www.rashtriyasahara.com

सर्पदंश सहित अन्य जहरीले कीड़ों के काटने से बचाव के बताए गए नुस्खे

दैनिक भास्कर आरा 10-03-2024

जगदीशपुर में बच्चों को आपदा से बचने के तरीके सिखाए गए

वंचित बच्चों के जीवन में लाया शिक्षा का उजियारा

उप मुख्यमंत्री सह जिला प्रभारी विजय सिन्हा आज आरा आएंगे

हम होंगे कामयाब, की धुन बजा छात्राएं करेंगी सीएम का स्वागत

विद्यालय गाथा

राजकीयकृत मध्य विद्यालय, बीहट, बरौनी
(बेगूसराय, बिहार)

राजकीयकृत मध्य विद्यालय, बीहट, बरौनी

है जूनून,
है जुनूं सा जीने में

एक ईमारत की नींव ईंट, गारे और सीमेंट से समृद्ध होती है लेकिन एक विद्यालय की नींव त्याग, समर्पण और सेवा भाव से निर्मित ढेरों संकल्पों को सुदृढ़ करने के लिए सामुदायिक सहयोग से ही फलीभूत होता है।

राजकीयकृत मध्य विद्यालय बीहट की स्थापना 1935 ई० में हुई। जाहिर है इस विद्यालय की स्थापना, अंग्रेजी हकूमत के रहमो करम पर नहीं बल्कि बीहट के ग्रामीणों के सामूहिक संकल्प के दम पर हुई थी।

यहाँ के लोग काफी कर्मठ और मेहनतकश लोग थे।उन्होंने अपने समाज की बेहतरी के लिए शिक्षा को बुनियादी जरूरत मानते हुए एकजुट होकर एक विद्यालय को स्थापित करने का प्रण लिया।

राजकीयकृत मध्य विद्यालय, बीहट सामाजिक सहभागिता का उत्कृष्ट उदाहरण बना।

ग्रामीणों ने न केवल भूमि दान,अर्थदान किया बल्कि अपना भरपूर श्रमदान भी किया। कहा जाता है कि इस विद्यालय के भवन निर्माण के लिए ईंटों और मिट्टी से बने खपरैलों के लिए स्वयं का भट्ठा और चाक एवं आवां निर्मित किए गए। ग्रामीणों के इस जुनून और जज्बे ने एक ऐसी ईमारत खड़ी की।स्कूल खुलते ही सैंकड़ों की संख्या में बच्चों का दाखिला होने लगा और दिनानुदिन इस संख्या में बढ़ोतरी होती चली गई।

इतने सारे बच्चों को पढ़ाने हेतु स्थानीय युवक ने भी अपना शैक्षिक श्रमदान दिया और उनके रहने खाने- पीने एवं जीविकोपार्जन के लिए भी ग्रामीणों ने सम्मिलित रुप से भरपूर सहयोग किया।

इस तरह गुलाम भारत में भी ग्रामीणों ने अपने बच्चों के सर्वांगीण विकास व गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के लिए उपयुक्त माहौल बनाए रखा ..।

आजादी के तीसरे दशक में 1976 में इस विद्यालय का सरकारीकरण हो गया फिर ग्रामीण सहयोग के साथ-साथ अनुदानों के बहाने इस विद्यालय को सरकारी सहायता भी मिलने लगा।

प्रगाथा

1985- 95 को इस विद्यालय को स्वर्णिम काल के रूप में लोग आज भी याद करते हैं। तब श्री रामाधार कुमर ने प्रधानाध्यापक का पदभार ग्रहण किया। उस समय यहाँ पढ़ने वाले बच्चों की संख्या लगभग 1200 थी एवं उन्हें पढ़ाने हेतु 25 शिक्षक कार्यरत थे।

2003 तक इस विद्यालय में प्रवेश हेतु बकायदा प्रवेश परीक्षा का प्रावधान था। मेरिट लिस्ट के अनुसार बच्चों का चयन एवं तत्पश्चात विद्यालय में नामांकन की प्रक्रिया शुरू होती थी। इसी बात से इस विद्यालय की उत्कृष्टता का अनुमान लगाया जा सकता है।

पुनः 2003-2016 तक एक ऐसा कालक्रम बीता कि चारों ओर उदासीनता का माहौल कायम हो गया। सिर्फ सरकार के दम पर चलने वाले इस विद्यालय के शिक्षकों ने सिर्फ अपनी जीविका चलाने हेतु गुणवत्ता पूर्ण शिक्षण कार्य के नाम पर खानापूर्ति करने लगे। विद्यालय की शिक्षण प्रणाली धीरे-धीरे चौपट होने लगी।
इसे हम विद्यालय की सुषुप्तावस्था में मान सकते हैं।

2016 में वह समय आया जब इस विद्यालय के प्रांगण में लाल लाल सूरज फिर से एक बार खिल उठा। जब रंजन कुमार पदोन्नति के उपरांत यहाँ प्रधानाध्यापक के पद पर योगदान दिए । उन्होंने सर्वप्रथम इस बात को महसूस किया कि इस विद्यालय की चरमराती शिक्षा व्यवस्था के लिए जिम्मेवार कहीं न कहीं स्थानीय नागरिकों की उपेक्षा थी। जो विद्यालय सामाजिक सहभागिता का उत्कृष्ट उदाहरण का एक सुंदर नमूना था आज वही सामाजिक बहिष्कार के कारण कई अराजक स्थितियों का अड्डा बना हुआ था।
उन्होंने ने सामाजिक सहयोग पुनः बढ़ाने के लिए पहल शुरू की। विद्यालय के जीर्ण शीर्ण भवन जिसमें मध्यान्ह भोजन और एकमात्र शौचालय संचालित होते थे जिसकी स्थिति काफी भयावह थी। यह दोनों एरिया जो काफी हाइजेनिक मानी जाती है वह गंदगी और दुर्व्यवस्था की शिकार बनी हुई थी।

सैनिटरी नैपकिन मशीन से लैस स्वच्छ एवं सुरक्षित प्रसाधन कक्ष

एकमात्र शौचालय होने के कारण लड़के बगल के खेतों में लघुशंका के लिए जाते थे वहीं शौच के लिए उन्हें वर्ग से छुट्टी लेकर घर जाना पड़ता था। बालिकाओं के शौचालय का ऊपरी हिस्सा टूटा हुआ था जिस कारण आस-पास शरारती तत्वों के उपद्रव से छात्राएँ एवं महिला शिक्षक खुद को हमेशा असुरक्षित महसूस करती थी। यहाँ तक कि ग्रामीण महिलाओं के द्वारा ऊपर से कचरा भी फेंका जाता था। विद्यालय खुलने के बाद उस गंदगी को प्रधानाध्यापक रंजन कुमार एवं वरिष्ठ शिक्षिका अनुपमा सिंह के द्वारा सफाई की जाती थी। रसोइया बहनें जो विद्यालय के बच्चों के लिए सुस्वादु भोजन बनाने के लिए नियुक्त थी वह अवांछित कचरों एवं गंदगियों को साफ करने के लिए अभिशप्त होने लगी.....

रंजन कुमार ने एक वर्ष तक इन सारी चीजों को आब्जर्व किया। फिर विद्यालय के प्रबंधन व शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाने हेतु एक रणनीति बनाकर उस पर काम करना शुरू किया। पुनः शनैः शनैः सामाजिक योगदान की प्रक्रिया शुरू होने लगी शिक्षक व अभिभावकों का भी सहयोग उन्हें मिलने लगा।

विद्यालय के मुलभूत सुविधाओं एवं संसाधनों में बढ़ोतरी एवं सौन्दर्यीकरण करने के लिए सरकारी अनुदान पर्याप्त नहीं था। महज 75,000 रुपये की वार्षिक राशि से विद्यालय के लिए तमाम बड़े सपने कभी पूरे नहीं किए जा सकते थे।

उनका सपना था कि गरीब से गरीब परिवार का बच्चा भी वह सारी सुविधाएँ पाने के हकदार थे जो महंगे से महंगे कॉन्वेंट में पढ़ने वाले साधन संपन्न परिवार के बच्चे को नसीब था।

उन्होंने इस सपने को न केवल खुली आंखों से देखा बल्कि बीहट के जन-जन तक पहुँचाया। उनके अंदर यह विश्वास जगाया कि उनके बच्चे भी स्कूल ड्रेस, जूते- मोजे, टाई -बेल्ट और आईकार्ड के सथ लैस होकर अपने विद्यालय जाएंगे और किसी से भी कमतर नहीं आंके जाएंगे।

यह सर्वविदित है कि सरकारी स्कूल के बच्चों की प्रतिभा सीखने के उन्मुक्त वातावरण की सहज उपलब्ता के कारण कहीं अधिक विकसित होते हैं।शायद यही वजह है कि सिविल सेवाओं में उतीर्ण अधिकांशतः बच्चे सरकारी स्कूलों में ही पढ़े होते हैं लेकिन महँगे निजी एवं कांवेंट स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के ताम झाम देखकर कहीं न कहीं सामाजिक रुप से उपेक्षित और हीन भावना से ग्रसित होते हैं। उनकी इस झिझक को दूर करने एवं उनमें भरपूर आत्मविश्वास को भरने हेतु प्रधानाध्यापक एवं विद्यालय के समर्पित शिक्षकों ने बकायदा एक मुहिम चलाया। बच्चों एवं उनके अभिभावकों के साथ उनकी लगातार बैठकें हुई। उन्हें भरोसे में लेकर ग्रामीणों व अभिभावकों से स्कूल की बेहतरी के लिए विद्यालय में योगदान की याचना की।

रंजन कुमार के सफल नेतृत्व में जब व्यवस्था सुधरने लगी तब भरोसा बढ़ा और लोग आगे बढ़ कर योगदान करने लगे ...

जैसा कि मैंने बताया पूर्व में मात्र एक ही शौचालय था जो उपयोग की दृष्टि से काफी असुरक्षित और असहज करने वाला था तथा पेयजल के नाम पर बस एक टूटा चापाकल था। इसे व्यवस्थित कर बच्चों और शिक्षकों को सुरक्षाबोध के साथ पूरे विद्यालय अवधि में सहज रखने के लिए उत्कृष्ट प्रसाधन की व्यवस्था देने हेतु प्रधानाध्यापक की पहल और वित्तीय अनुदान के लिए स्वयं आगे आने का बहुत ही सकारात्मक प्रभाव पड़ा । शिक्षक अनुपमा सिंह (दो हैंड वाश स्टेशन के साथ रनिंग वॉटर पाइप एवं नल फिटिंग) पूनम कुमारी (समरसिबल) और सीमा कुमारी (सीढ़ी घर के लिए गेट) द्वारा दिए गए अनुदान से धीरे-धीरे 13 शौचालय और 14 यूरिनल की व्यवस्था की गई (जिसमें बालिका यूरिनल - 9 एवं बालक यूरिनल - 5, बालक शौचालय -4, बालिका शौचालय - 8 , विशेष दिव्यांग बच्चों के लिए कमोड - 1 और हैंड वॉश स्टेशन - 6 एवं नल -35 का निर्माण करवाया गया।) तथा सीढ़ी घर के लिए मजबूत लोहे का गेट लगाकर बाहरी उपद्रवों से विद्यालय के ऊपरी गलियारे को सुरक्षित किया गया।

हमारे ख्याल से इतनी सुंदर व्यवस्था एवं सुरक्षित प्रसाधन कक्ष बिहार के किसी प्रारंभिक स्तर के कुछ गिने चुने विद्यालय में ही हो सकती है। यही वजह है कि मध्य विद्यालय, बीहट, स्वच्छता के मानकों पर फाइव स्टार रेटिंग के साथ खरा उतरने वाला राज्य के चुनींदे 26 विद्यालयों में से एक है।

विद्यालय को राज्य स्वच्छता पुरस्कार 2021 तथा स्वच्छता स्थायित्व पुरस्कार 2022 मिल चुका है।

इसके अलावे इस विद्यालय की मॉर्निंग एवं इवनिंग असेंबली एकदम अलग हटकर है। जिसकी सराहना एन डी टीवी की पूरी टीम ने की एवं वहाँ रहकर विद्यालय की समस्त क्रियाकलाप को देखा, जिसका प्रसारण प्राइम टाइम पर प्रमुखता से किया गया।

इवनिंग एसेंबली भी विद्यालय का एक नवाचार है जिसमें क्वीजू बाबू के जरिए बच्चों को गेम एवं क्वीज करवाया जाता है। उसके बाद बच्चे पंक्तिबद्ध होकर अपने प्रधानाध्यापक के साथ हाइ फाइ कर हाथ हिलाते हुए हँसते खेलते वापस अपने घर जाते हैं।

प्रिंसिपल सर के प्यार से वशीभूत बच्चे कई बार छुट्टी होने पर भी घर जाना नहीं चाहते हैं क्योंकि उन्हें कम से कम स्कूल में तो प्रिंस और प्रिंसेज की फीलिंग आती है। कई बार मीठी झिड़की के साथ उन्हें घर भेजा जाता है कि अब जाओ घर तुम्हारे अभिभावक चिंतित हो रहे

इवनिंग एसेंबली भी विद्यालय का एक नवाचार है जिसमें क्वीजू बाबू के जरिए बच्चों को गेम एवं क्वीज करवाया जाता है। उसके बाद बच्चे पक्तिबद्ध होकर प्रधानाध्यापक रंजन सर से हाइ फाइ करते हुए हँसते खेलते वापस अपने घर जाते हैं।

एस सी ई आर टी, पटना की संयुक्त निदेशक
डॉक्टर रश्मि प्रभा , राजकीयकृत मध्य विद्यालय, बीहट में

बच्चों की ऐसी आतुरता देखते हुए बच्चों के लिए टाइम पीरियड को उनकी सुविधानुसार बढ़ाया गया। मॉर्निंग एवं इवनिंग में भी बच्चों की एकस्ट्रा क्लास शुरू की गई। एक्सट्रा क्लास में बच्चों को प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी समेत योगा, गायन, नृत्य एवं नाटकों का भी पूर्वाभास करवाया जाता है।

बच्चों को कंप्यूटर सिखाने के लिए 5 कंप्यूटर इस विद्यालय के पूर्ववर्ती छात्रों ने दिया। यह भी एक बड़ी बात है कि इलेमेंट्री लेवल पर बिहार का पहला सरकारी विद्यालय है जहाँ एलुमिनाय मीट का आयोजन होता है।

खेल कूद के लिए मध्य विद्यालय बीहट का प्रांगण हमेशा अव्वल रहा है। यहाँ तकरीबन 35 तरह के खेलों का प्रशिक्षण 24 स्पोर्ट्स ट्रेनर के जरिए होता है।

जिलाधिकारी बेगूसराय के सम्मुख विद्यालय के बच्चे

वैसे तो सैंकड़ों स्वर्ग, रजत एवं कांस्य पदक बच्चों ने जीते हैं लेकिन मैं अगर बात करूं मुख्यमंत्री खेल सम्मान की जो खेल जगत का सबसे सम्मानित पुरस्कार है यहाँ से 8 बच्चों को यह सम्मान मिल चुका है। इसमें छोटू और शशांक को 2 बार एवं अंजनी, उषा, सुजीत,अंशु नैतिक और ललन को एक बार मिल चुका है।

रेन वाटर हारवेस्टिंग एंड वेस्ट वाटर मैनेजमेंट विषय पर नेशनल चिल्ड्रेन क्लाइमेट कॉन्फ्रेंस अहमदाबाद और दिल्ली में वैभव और राधा को बेस्ट प्रेजेंटर का अवार्ड मिला है।

यहाँ बच्चों की हर वर्ष नेशनल चिल्ड्रेन असेंबली में गौरवपूर्ण भागीदारी होती रही है।

शुभांगी दिनकर काव्य प्रतियोगिता में नेशनल चैंपियन रही है।

नेशनल गेम में शामिल होने वाले बच्चे

यहाँ आठवीं वार्षिक परीक्षा से नवीं कक्षा में शत प्रतिशत बच्चे नामांकित होते हैं जो कि जीरो ड्रॉप आउट का एक अच्छा उदाहरण है।

आगे उच्च कक्षा में भी मैट्रिक एवं इंटर के स्कूल टॉपर एवं टॉप 20 बच्चे इसी स्कूल के होते हैं।

इतना ही नहीं जब ये बच्चे उच्च कक्षा में चले जाते हैं तो किसी न किसी रुप में विद्यालय से जुड़े रहते हैं। उनके लिए विद्यालय का दरवाजा हमेशा खुला रहता है। उन्हें उचित कैरियर काउंसिलिंग एवं प्रतिष्ठित कॉलेज में नामांकन के लिए भरपूर मदद की जाती है। अभी हाल.ही में अनुराग का चयन दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दू कॉलेज में.हुआ है।

यहाँ का मध्यान्ह भोजन पौष्टिकता से भरपूर सुस्वादु होता है। बच्चे को यहाँ भरपेट भोजन कराया जाता है यानी माप का कोई पैमाना यहाँ नहीं रखा गया है। जिला स्तर एवं राज्य स्तर के कई अधिकारियों ने बच्चों के साथ इस भोजन का स्वाद चखा है।

यहाँ बाल केन्द्रित अधिगम के तहत बच्चों के लिए शैक्षिक एवं सह शैक्षिक पाठ्यक्रम डिजाइन किया गया है। यहाँ डेढ़ दर्जन से अधिक नवाचार पूरे हफ्ते, महीने और वर्ष भर चलते रहते हैं।

पूरे विद्यालय को मुख्य रुप से चार हाउस तक्षशिला, मिथिला, विक्रमशिला और शांतिनिकेतन में बांटा गया है।

यहाँ बाल केन्द्रित अधिगम के तहत बच्चों के लिए शैक्षिक एवं सह शैक्षिक पाठ्यक्रम डिजाइन किया गया है। यहाँ डेढ़ दर्जन से अधिक नवाचार पूरे हफ्ते, महीने और वर्ष भर चलते रहते हैं

राज्य स्वच्छता पुरस्कार के साथ शिक्षक एवं बच्चे

प्रत्येक हाउस से बालक एवं बालिका वर्ग के अलग-अलग लीडर हैं जो पूरे विद्यालय को सुव्यवस्थित रखने में मदद करते हैं।

इसके अलावा बाल संसद, मीना मंच, इको क्लब के बच्चे भी अलग अलग क्षेत्रों में सक्रिय रहते हैं।

यहाँ प्रत्येक घंटे पर एक वाटर वेल लगती है जिसमें बच्चों को एलर्ट किया जाता है कि वे अपनी वाटर बोटल निकाल कर पानी पी लें ताकि उनके शरीर में पानी की कमी नहीं रहे।

यहाँ का विद्यालय परिसर काफी साफ सुथरा और कक्षा चलने के दरम्यान अपेक्षाकृत शांत रहता है। गुलमोहर और अमलतास के घने छायादार वृक्ष इस परिसर की शोभा बढ़ाते हैं साथ ही प्रार्थना सभा के मंच पर दर्जनों गमले में गुलाब, गेंदे, गुलदाउदी और पिटुनिया के सुंदर सुंदर फूल अपनी खुबसूरती बिखेरते रहते हैं इसकी देखभाल वरिष्ठ शिक्षक अनुपमा सिंह के निर्देशन में बच्चों के द्वारा किया जाता है।

इस विद्यालय में पठन पाठन के साथ साथ व्यावसायिक कौशल का भी प्रशिक्षण दिया जाता है जिससे बच्चे भविष्य में अपना जीविकोपार्जन कर सके । इसके अन्तर्गत अब तक साबुन, मोमबत्ती, गुलाल,एवं सैनिटरी नैपकिन बनाने का प्रशिक्षण दिया गया है ...

यहाँ प्रत्येक घंटे पर एक वाटर वेल लगती है जिसमें बच्चों को एलर्ट किया जाता है कि वे अपनी वाटर बोटल निकाल कर पानी पी लें ताकि उनके शरीर में पानी की कमी नहीं रहे।

इस विद्यालय में बच्चों की अपनी दो पत्रिका प्रमुख रुप से प्रकाशित होती है। टुनमुन जो कि एक कलात्मक एवं हस्तलिखित पत्रिका है जो संपादक प्रीति कुमारी के निर्देशन में बच्चे खुद तैयार करते हैं। वहीं कलरव लर्निंग जर्नल डिजिटल ई पत्रिका है जिसे राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सराहा गया है।

इस विद्यालय में पठन पाठन के साथ साथ व्यावसायिक कौशल का भी प्रशिक्षण दिया जाता है जिससे बच्चे भविष्य में अपना जीविकोपार्जन कर सके । इसके अन्तर्गत अब तक साबुन, मोमबत्ती, गुलाल,एवं सैनिटरी नैपकिन बनाने का प्रशिक्षण कुशलतापूर्वक दिया गया है।

कक्षा में अधिगम प्रक्रिया प्रतिफल के लिए मॉडल क्लास प्रेजेंटेशन, क्रियेटिव एक्टिविटी आदि एक्टिविटी का प्रत्येक सप्ताह प्रधानाध्यापक के द्वारा प्रत्येक वर्ग में अवलोकन किया जाता है।

विद्यालय को जिले का उत्कृष्ट पुरस्कार एवं राज्य सरकार के टॉप 20 स्कूलों में शामिल किया गया है।

प्रगाथा

प्रारंभिक विद्यालय स्तर पर बच्चे काफी एक्टिव और क्रिएटिव होकर अपनी कल्पना का साहित्य अपनी भाषा में गढ़ सके, इस हेतु मध्य विद्यालय बीहट, अपने डिजिटल मैगजीन कलरव लर्निंग जर्नल के माध्यम से उन्हें एक अच्छा प्लेटफॉर्म दे रहा है । स्कूल लेवल पर ऐसा प्रयोग पहली बार देखने को मिला है । बच्चे और शिक्षक मिलकर इसे और अधिक बेहतर बनाएँ ताकि आनेवाले समय में ये विद्यालयी नवाचार का एक उत्कृष्ट उदाहरण बने ।

रौशन कुशवाहा (भा प्र से)
जिला पदाधिकारी, बेगूसराय

इस विद्यालय में समय समय पर जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के उच्चाधिकारियों एवं प्रतिष्ठित साहित्यकार, रंगकर्मी, शिक्षाविद एवं अन्य क्षेत्रों के विशेषज्ञों का आगमन होता रहा है।
इसी कड़ी में वीकेंड विजन की शुरुआत की गई जिसके जरिए अलग अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञों से बच्चे लाभान्वित होते रहे।

इस तरह से कम शिक्षक और कम संसाधन की कमी झेल रहा यह विद्यालय अपनी जिद, जुनून और कुछ कर दिखाने के जज्बे के साथ निरंतर आगे बढ़ता जा रहा है। यह विद्यालय सही मायने में दुष्यंत कुमार की इस पंक्ति को चरितार्थ करता है ....

कौन कहता है, आसमान में सुराख नहीं हो सकता
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो ...!!!

प्रस्तुति - सीमा कुमारी
स्नातक ग्रेड शिक्षक
राजकीयकृत मध्य विद्यालय, बीहट

राजकीयकृत मध्य विद्यालय, बीहट के लिए कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तियों के उद्गार

इस विद्यालय के बच्चों का कॉन्फिडेंस लेवल एकदम हाई लेवल का है। शिक्षकों के नवाचार एवं उनके द्वारा बनाया गया टीचिंग लर्निंग मैटेरियल काफी सुंदर, आकर्षक एवं छात्रों के लिए एकदम उपयोगी हैं।

पूर्व अपर मुख्य सचिव
एस. सिद्धार्थ

राजकीयकृत मध्य विद्यालय, बीहट बेगूसराय ही नहीं पूरे बिहार का एक मॉडल स्कूल है, ऐसे स्कूलों की संख्या बढ़नी चाहिए

पूर्व अपर मुख्य सचिव
के.के. पाठक

विद्यालय की शैक्षणिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था उत्कृष्ट है। समाज के लिए इस विद्यालय का योगदान निश्चित रूप से काबिलेतारीफ है। स्वच्छता के मापदंड पर इस विद्यालय ने राज्य में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है।

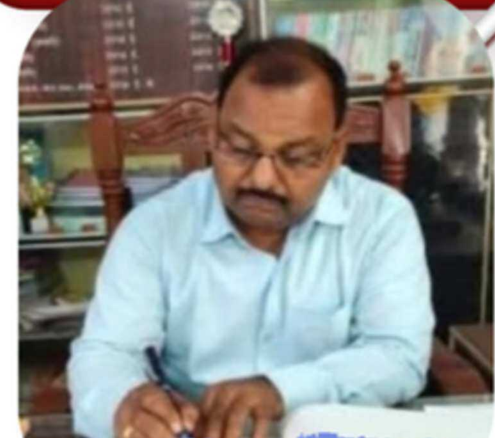

क्षेत्रीय शिक्षा, उपनिदेशक मुंगेर प्रमंडल
विद्यासागर सिंह

इस विद्यालय का हर क्षेत्र पढ़ाई, खेलकूद,कला,विज्ञान आदि में उल्लेखनीय प्रगति की है। विशेष रूप से खेलकूद के क्षेत्र में जिला एवं राज्य स्तर पर कई उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है।

अरुण कुमार सिंह
उप महालेखा परीक्षक एवं नियंत्रक
भारत सरकार

खबरों में राजकीयकृत मध्य विद्यालय, बीहट

दैनिक जागरण

तंत्र के गण

www.jagran.com

"हम एसा शिक्षा व्यवस्था विकसित करना चाहते है, जिससे युवाओं को विदेश जाने की जरूरत न पड़े। मध्यम वर्ग को लाखों-करोड़ो रुपये खर्च करने की जरूरत नहीं पड़े। हम ऐसे संस्थान भी बनाना चाहते हैं जो विदेश से लोगों को भारत आने के लिए आकर्षित करें।" - श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

एक संकल्प, जुड़ते गए लोग और बदल गया विद्यालय

बेगूसराय में एक शिक्षक के **प्रयास** ने वदल दी तस्वीर, लोगों को जोड़ा, शिक्षा के प्रति समर्पण भाव से माडल बना विद्यालय

रंजन कुमार, प्रधानाध्यापक, मध्य विद्यालय, बीहट, बेगूसराय

चेतना सत्र के दौरान विद्यालय में मौजूद बच्चे • जागरण

विद्यालय ने अर्जित की कई उपलब्धियां

- बिहार उत्कृष्ट किलकारी बालकेंद्र विद्यालय पुरस्कार
- टीएम बेगूसराय द्वारा श्रेष्ठ विद्यालय प्रबंधन पुरस्कार
- बिहार स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार (दो बार)
- नेशनल चिल्ड्रन क्लाइमेट कांग्रेस बेस्ट प्रोजेक्ट अवार्ड (कैंपस और राज्य)
- नेशनल बाल बैडमिंटन चैंपियनशिप (कांस्य पदक)
- राष्ट्रीय मेधा छात्रवृत्ति में अनुराग का चयन
- वालीबाल, टेबल टेनिस, सेपक टकरा एवं कुश्ती में राष्ट्रीय स्तर पर विद्यार्थियों का चयन
- राष्ट्रीय विद्यालय नेहरू केंद्र के नेशनल कांग्रेस में भागीदारी (दो बार)
- शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा सर्वश्रेष्ठ सम्मान राजकीय शिक्षक पुरस्कार
- एससीईआरटी के स्कूल लीडरशिप एकेडमी में कोर ग्रुप के सदस्य
- विद्यालय से बच्चों की ड्रॉपआउट दर लगभग शून्य

सुशिक्षित समाज के लिए भगीरथ प्रयास

केंद्र सरकार की वो योजनाएं जिनसे बदल रही शिक्षण संस्थानों की तस्वीर

77.7% भारत में साक्षरता दर

84.5% पुरुष साक्षरता दर

70.3% महिला साक्षरता दर

भारत के चार सबसे शिक्षित राज्य

केरल	96.2%
दिल्ली	89.0%
उत्तराखंड	87.6%
हिमाचल	86.6%

(स्रोत: नेशनल सैंपल सर्वे 2017-18)

भारत में कुल कितने उच्च शिक्षण संस्थान

कुल विश्वविद्यालय 1,078 (मार्च 2023 तक यूजीसी के अनुसार)

आईआईटी	23
आईआईएम	21
ट्रिपल आईटी	25
एनआईटी	32
एम्स	19

उच्च शिक्षा के लिए विद्यार्थियों का इनरोलमेंट 2021-2022

कुल इनरोलमेंट 4.33 (91 लाख ज्यादा 2014-15)

छात्राओं का 2.07 (50 लाख ज्यादा 2014-15)

दैनिक भास्कर

बलिया • साहेबपुरकमाल • आसपास

खेलकूद • खेलेंगे-जीतेंगे के संकल्प घोष के साथ नेशनल स्कूल गेम में बच्चे दिखाएंगे प्रतिभा

स्कूली खेल के 17 विधाओं में बीहट मध्य विद्यालय के 162 छात्र-छात्राएं ले रहे भाग

स्कूली गेम में भाग लेने के लिए तैयार टीम के साथ अतिथि।

खेल और शिक्षा के संतुलन को लेकर हो रहा काम

आठ साल से बच्चे हासिल कर रहे उपलब्धियां

हिन्दुस्तान

बीहट की छात्राओं का शानदार प्रदर्शन

मवि बीहट की व्यवस्था उत्कृष्ट : डीईओ

दैनिक भास्कर बेगूसराय 16-02-2025

कैथी लिपि से ऐतिहासिक दस्तावेजों को समझने और संरक्षित करने में आसान होगा

बच्चों को दी कैथी लिपि की जानकारी

बच्चों में भारतीय लिपियों के प्रति जागरूकता पैदा किया

बीहट मध्य विद्यालय का जायजा लेने पहुंचे राज्य उपनिदेशक बच्चों से हुए प्रभावित

जागरण

मवि बीहट के शैक्षणिक माहौल से अवगत हुए जमुई जिले के शिक्षक

खबरों में राजकीयकृत मध्य विद्यालय, बीहट

बीहट मध्य विद्यालय की ई-पत्रिका 'कलरव' का किया गया विमोचन

संवाददाता, बीहट

ई-पत्रिका का विमोचन करते प्रतिनिधि.

बेगूसराय के शैक्षिक पटल पर उत्कृष्ट सरकारी विद्यालयों में शुमार मिडिल स्कूल बीहट की ई-पत्रिका कलरव लर्निंग जर्नल का फलक लगातार विस्तृत हो रहा है. इस ई-पत्रिका के पांचवें व छठे संयुक्त अंक का अनावरण ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित समस्तीपुर जिले के उत्क्रमित मध्य विद्यालय लगुनिया सूर्यकंठ के प्रधानाध्यापक गौरव कुमार और भभुआ जिले के मध्य विद्यालय इसहक के राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित प्रधानाध्यापक हरिदास शर्मा ने संयुक्त रूप से विमोचन करते हुए मध्य विद्यालय बीहट के बाल वैज्ञानिक नवाचारों की प्रशंसा की. उक्त आशय की जानकारी देते हुए मध्य विद्यालय बीहट के प्रधानाध्यापक रंजन कुमार ने दी. उन्होंने बताया कि इस अवसर पर अपने ... गौरव कुमार ने अपनी शुभकामना देते हुए कहा कि बिहार की क्रांतिभूमि राष्ट्रकवि दिनकर की जन्मस्थली बेगूसराय के मध्य विद्यालय बीहट द्वारा प्रकाशित डिजिटल पत्रिका 'कलरव' लर्निंग जर्नल, निश्चित रूप से बिहार के बच्चों, शिक्षकों एवं अन्य लोगों के लिए उनके जीवन से प्रेरित होने का काम ... की जाए, कम होगी. विद्यालय के द्वारा इस तरह का प्रयास अन्य लोगों के लिए अनुकरणीय होगा. पत्रिका में प्रकाशित सभी संदर्भ बच्चों से संबंधित, शिक्षक से संबंधित और समाज से संबंधित हैं. निश्चित रूप से सुसभ्य समाज के निर्माण में भावी पीढ़ी की सृजनशीलता को सही आकार देने में इस पत्रिका की ...

मध्य विद्यालय बीहट ने जीता स्वच्छता–स्थायित्व पुरस्कार

आदर्श बाल विकास अवधारणा को मिला बिहार राज्य विद्यालय का पुरस्कार

कैंपस प्रभात

प्रभात खबर | 05.09.2023 | 06

राजकीयकृत शिक्षकों के कुशल नेतृत्व में कीर्तिमान स्थापित कर रहा मध्य विद्यालय बीहट, सन 2016 में नामांकित थे 650 बच्चे, आज 937 बच्चे कर रहे पढ़ाई

बच्चों के समावेशन व समग्र विकास के लिए रोज 10 घंटे मेहनत करते हैं शिक्षक

विद्यालयों को दिलायी राष्ट्रीय स्तर पर पहचान

कैंपस जागरण

शिक्षा का कोई विकल्प नहीं, बच्चों को बेहतर शिक्षा दें: सिद्धार्थ

अपर मुख्य सचिव एस सिद्धार्थ ने किया राजकीयकृत मध्य विद्यालय की ई-पत्रिका कलरव लर्निंग जर्नल का किया गया विमोचन

गुरुदक्षिणा कार्यक्रम में पूर्ववर्ती छात्रों ने बीहट मध्य विद्यालय को दिये पांच कंप्यूटर

प्रतिनिधि, बीहट

विद्यालय प्रधान को कंप्यूटर सेट सौंपते पूर्ववर्ती छात्र.

राजकीयकृत मध्य विद्यालय, बीहट के पूर्ववर्ती छात्रों ने रविवार को आयोजित गुरुदक्षिणा कार्यक्रम के तहत विद्यालय को लगभग सवा लाख रुपये का पांच कम्प्यूटर सेट विद्यालय प्रधान रंजन कुमार व वरिष्ठ शिक्षिका अनुपमा सिंह को भेंट की. दर्जनों पूर्ववर्ती छात्र और विद्यालय के सैकड़ों बच्चों की उपस्थिति में विद्यालय के पूर्व प्रधान विवेकानंद शर्मा, शिक्षिका मीना कुमारी, स्मृतिशेष रामकांत कुंवर के पुत्र अवनीश कुमार, आदेशपाल रामेश्वर साह के शिक्षक पुत्र विपिन कुमार का सम्मान अंगवस्त्र, सम्मान पत्र व पौधा देकर किया गया. इस अवसर पर पूर्ववर्ती छात्रों के इस प्रयास की सराहना करते हुए तेघड़ा विधायक रामरतन सिंह ने कहा कि विद्यालय के पूर्ववर्ती छात्रों द्वारा यह आदर्श स्थापित किया गया है. समाज को इससे सीख लेनी चाहिये. वहीं भारद्वाज गुरुकुल के निदेशक शिवप्रकाश भारद्वाज ने कहा कि आज जब ये छात्र इस रूप में विद्यालय के लिए काम कर रहे हैं तो वर्तमान शिक्षकों को भी अपने छात्रों को इस रूप में तैयार करना होगा. विवेकानंद शर्मा ने कहा कि यह क्षण हम सबके लिए प्रेरणादायी है. बीहट का यह विद्यालय मेरे लिए सब दिन प्रिय रहा है और आज वर्तमान स्वरूप देखकर गौरव की अनुभूति हो रही है. विद्यालय प्रधान रंजन कुमार ने कहा कि पूर्ववर्ती छात्रों का यह सहयोग अपने समय का इतिहास लिखेगा की विद्यालय के छात्र इस रूप में भी अपने विद्यालय को याद कर सकते हैं. समारोह में स्वागत भाषण पूर्ववर्ती छात्र मनीष कुमार और संचालन डॉ कुंदन कुमार ने किया. इस अवसर पर पूर्ववर्ती छात्र अजीत कुमार, कृष्ण कुमार, ललन कुमार, मुकेश कुमार, राजेश कुमार, सुशील पोद्दार सहित अन्य छात्रों द्वारा सम्मान किया गया. मौके पर नगर परिषद बीहट उपमुख्य पार्षद ऋषिकेश कुमार, दिनकर पुस्तकालय के रामनाथ सिंह, विद्यालय की वरिष्ठ अध्यापिका अनुपमा सिंह, बरौनी पत्रकार संघ अध्यक्ष विपिन राज, साइकिल पे सांडे टीम के वरिष्ठ साथी विनोद भारती, सुजीत कुमार, कुमार गौतम, अंशु कुमार, अभिनव कुमार सहित अन्य उपस्थित थे. मौके पर विद्यालय की छात्राओं द्वारा स्वागत गान की प्रस्तुति की गयी.

दैनिक भास्कर | बरौनी • बीहट • तेघड़ा

आयोजन • मध्य विद्यालय बीहट के वीकेंड विज्ञान में कृषि विज्ञान पर संवाद

मिट्टी के सूक्ष्म जीव हैं हमारी मां, इनकी करें रक्षा : कृषि वैज्ञानिक

सिटी रिपोर्टर | बीहट

मध्य विद्यालय बीहट में कृषि पर संवाद करते वैज्ञानिक डॉ रामपाल

वर्मी कम्पोस्ट निर्माण से कमा सकते हैं लाखों रुपये

क्या बच्चे भी बन सकते हैं किसान

वैज्ञानिक तकनीक से कुक्कुट पालन करें

सिटी रिपोर्टर | खोदावंदपुर

दैनिक भास्कर | बरौनी • बीहट • तेघड़ा

बच्चों ने पक्षियों से संबंधित सवाल पूछकर अपने ज्ञान की जिज्ञासा को उजागर किया

पक्षी हमारे दोस्त, इसकी रक्षा के लिए आगे आना होगा:अली हुसैन

सिटी रिपोर्टर | बीहट

मध्य वि. बीहट में अली हुसैन ने बच्चों से किया संवाद

बच्चों ने पक्षियों के संबंध में अली हुसैन से किया सवाल

जीवन को समझने का होता है अलग अलग विज्ञान